Sociology Study: Cultural Lag (सांस्कृतिक विलम्बना)

Date: February 9, 2026

Author: Dr. Sangeeta Prakash

परिचय (Introduction)

समाज निरंतर परिवर्तनशील है। विज्ञान, तकनीक और भौतिक साधनों में परिवर्तन बहुत तीव्र गति से होता है, जबकि विचार, मूल्य, विश्वास, रीति-रिवाज और संस्थाएँ अपेक्षाकृत धीमी गति से बदलती हैं। इसी असमान परिवर्तन की स्थिति को समाजशास्त्र में 'सांस्कृतिक विलम्बना' कहा जाता है। इस अवधारणा का प्रतिपादन सर्वप्रथम डब्ल्यू. एफ. ऑगबर्न (W. F. Ogburn) ने किया।

I. अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and Definitions)

सांस्कृतिक विलम्बना का अर्थ है— संस्कृति के विभिन्न अंगों में परिवर्तन की गति समान न होना। जब संस्कृति का एक भाग (विशेषकर भौतिक संस्कृति) तीव्र गति से बदलता है और दूसरा भाग (अभौतिक संस्कृति) उस परिवर्तन के अनुरूप स्वयं को ढाल नहीं पाता, तो दोनों के बीच जो अंतर उत्पन्न होता है, वही सांस्कृतिक विलम्बना कहलाता है।

प्रमुख परिभाषा (Major Definition)

- **ऑगबर्न (Ogburn) के अनुसार:** "संस्कृति के दो परस्पर संबंधित भागों में जब परिवर्तन की गति असमान होती है, तब जो तनाव उत्पन्न होता है, उसे सांस्कृतिक विलम्बना कहा जाता है।"

सरल शब्दों में: भौतिक संस्कृति आगे बढ़ जाती है और अभौतिक संस्कृति पीछे रह जाती है।

II. सांस्कृतिक विलम्बना का सिद्धांत (Theory of Cultural Lag)

ऑगबर्न ने यह सिद्धांत अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **'Social Change'** में प्रस्तुत किया। उनके सिद्धांत के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:

- समाज की संस्कृति दो भागों में विभाजित है— **भौतिक** और **अभौतिक**।
- दोनों परस्पर संबंधित होते हुए भी समान गति से परिवर्तित नहीं होते।
- भौतिक संस्कृति में परिवर्तन सरल, तीव्र और प्रत्यक्ष होता है क्योंकि इसका संबंध उपयोगिता से है।
- अभौतिक संस्कृति में परिवर्तन जटिल, धीमा और मानसिक अनुकूलन पर आधारित होता है।
- इसी असमान परिवर्तन से सामाजिक असंतुलन और तनाव उत्पन्न होता है।

III. भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति (Material and Non-Material Culture)

1. **भौतिक संस्कृति (Material Culture):**
   - इसमें मशीनें, उपकरण, तकनीक, उद्योग, यातायात, संचार के साधन, वस्त्र और आवास शामिल हैं।
   - इसमें परिवर्तन शीघ्र होता है क्योंकि नई तकनीक को अपनाना तुलनात्मक रूप से आसान होता है।
2. **अभौतिक संस्कृति (Non-Material Culture):**
   - इसमें मूल्य, विश्वास, धर्म, परंपराएँ, नैतिकता, कानून और दृष्टिकोण शामिल होते हैं।
   - इसमें परिवर्तन धीमा होता है क्योंकि यह मनुष्य की भावनाओं, आस्थाओं और वर्षों पुराने संस्कारों से जुड़ी

होती है।

IV. सांस्कृतिक विलम्बना के कारण (Causes of Cultural Lag)

सांस्कृतिक विलम्बना उत्पन्न होने के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

1. **परम्परावादिता (Traditionalism):** अधिकांश लोग पुरानी परंपराओं और विश्वासों से गहराई से जुड़े होते हैं, जिससे वे नए विचारों को जल्दी स्वीकार नहीं करते।
2. **नवीनता के प्रति भय (Fear of Innovation):** नई तकनीक या विचारों को लेकर समाज में आशंका रहती है कि इससे उनके मूल जीवन-मूल्य नष्ट हो जाएंगे।
3. **अतीत के प्रति निष्ठा (Loyalty to the Past):** लोग पूर्वजों की परंपराओं को छोड़ना नैतिक रूप से गलत मानते हैं।
4. **निहित स्वार्थ (Vested Interests):** अभौतिक संस्कृति में परिवर्तन से अक्सर सत्ता, सामाजिक स्थिति और प्रतिष्ठा प्रभावित होती है, इसलिए प्रभावशाली वर्ग इसका विरोध करता है।
5. **नवीन विचारों की जाँच में कठिनाई:** अभौतिक परिवर्तनों की उपयोगिता को भौतिक वस्तुओं की तरह तुरंत परखना संभव नहीं होता।
6. **विभिन्न दृष्टिकोण (Different Perspectives):** फ्रांसिस ई. मेरिल के अनुसार, समाज के सभी वर्ग परिवर्तन को एक समान दृष्टि से नहीं देखते, जिससे गति में अंतर आता है।
7. **सामाजिक संस्थाओं की भूमिका (Role of Social Institutions):** धर्म, परिवार और जाति जैसी संस्थाएं प्रायः रूढ़िवादी होती हैं और परिवर्तन की गति को धीमा कर देती हैं।

V. निष्कर्ष (Conclusion)

सांस्कृतिक विलम्बना आधुनिक समाज की एक प्रमुख विशेषता है। जब तक समाज की अभौतिक संस्कृति (सोच और मूल्य), भौतिक प्रगति (तकनीक) के साथ तालमेल नहीं बिठा पाती, तब तक सामाजिक विघटन और असंतुलन बना रहता है। सामाजिक प्रगति के लिए इन दोनों के बीच संतुलन अनिवार्य है।